>

Title: Regarding alleged scam in supply of medicines in Andaman and Nicobar Islands.

श्री विष्णु पद राय (अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह): सभापति महोदय, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में जो मैडीसिन्स सप्लाई हो रही हैं, उनमें बड़ा घोटाला है। दवाई के नाम पर जो कम्पोजीशन होगा और जो पोटेंसी आनी चाहिए, वह लोगों को नहीं मिल रही है। मैं एक पार्लियामेंट क्वैश्चन का जिक्र करूंगा, 26 नवम्बर, 2010 को अंडमान-निकोबार में प्रशासन ने दवाई खरीदी लोकल दुकानदारों से 11 करोड़ 28 लाख रुपए की और सेंट्रल डिपो चेन्नै और कोलकाता, जिसका मालिक दिल्ली में बैठा है, सेंट्रल डिपो के माध्यम से उसने दवाई खरीदी 9 करोड़ 72 लाख रुपए की। कुल दवाई खरीदी 21 करोड़ रुपए की। वहां की आबादी 4 लाख है। हर आदमी दवाई खाने से एक आदमी पर साल में खर्चा लगभग 5 हजार रुपए का होता। है, रुपया सरकार ने दिया, लेकिन क्या हुआ? हमने विरोध किया था। सी.बी.आई. ने अंडमान सेंट्रल स्टोर, जहां मैडीसिन रहती हैं, वहां रेड किया और 11 सैम्पल्स उन दवाओं के लिए गए जो लोकल डीलर से परचेज की गई थीं और उन्हें कोलकाता की ड्रग टैस्टिंग लेबोरेट्री में भेजा गया। 11 सैम्पल्स में से 6 सैम्पल्स निकले सब-स्टेंडर्ड। जो पोटेंसी है, वह नहीं है। जो कंपोजीशन दवाई में लिखा रहता है, वह कंपोजीशन नहीं है। पोटेंसी भी कम है। अब सोचिए हालत क्या बनने वाली है। अंडमान-निकोबार के लिए जो दवाई जैनरिक के नाम पर बनती हैं, वह दवाई इंडिया में किसी भी जगह नहीं मिलेगी।

भारतवर्ष में जो दवाई की किताब है, सिम्स नाम है, मिम्स है, ड्रग टुडे है, ड्रगलिस्ट की जो किताब भारत में है, उस ड्रगलिस्ट में अंडमान की मैडीसिन दिखाई नहीं देगी। जैनेरिक मैडीसिन के नाम पर क्या हो रहा है, उसका मैं आपको एक एग्जाम्पल दूंगा। मैं खुद शिकार हूं, ब्लड प्रैशर का, मैडीसिन खाकर मुझे शुगर हुई और मेरा बी.पी. बढ़ गया। अगर कोई आदमी दवाई सब स्टैण्डर्ड खायेगा तो उसका परिणाम क्या निकलेगा। मैं आपको एक उदाहरण दूंगा, एक एग्जाम्पल दूंगा कि जो दवाई घटिया कम्पनी की हो, छोटी सी कम्पनी की हो तो क्या बनता है। उदाहरण स्वरूप अंडमान निकोबार द्वीपसमूह में ब्लड प्रैशर के लिए दवाई है, कम्पनी का नाम रैनबैक्सी है और दवाई एवाकॉर्ड 5 एम.जी. की 10 टैबलेट की कीमत 11.50 रुपये है और यह दवाई अंडमान निकोबार में जैनेरिक मैडीसिन के नाम पर बिक्री हो रही है। वहीं एम्लोडेपिन 5 एम.जी. की 10 टैबलेट की कीमत केवल 1.50 रुपये है। इसका परिणाम क्या होगा, मैडीसिन सब-स्टैण्डर्ड होगी, उसका साइड इफैक्ट होगा, किडनी खराब होगी, शुगर की बीमारी होगी, यह अंडमान निकोबार में हो रहा है। मैं कुछ मैडीसिंस के नाम का आपको उल्लेख करना चाहता हूं...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप सरकार से क्या चाहते हैं?

श्री विष्णु पद राय : मैं यह कहना चाहता हूं, खासकर निफेडेपिन एक दवाई है और कम्पनी का नाम एनोड फार्मा है। इस कम्पनी का दुनिया में आपने कहीं नाम नहीं सुना होगा। उसकी 10 टैबलेट का दाम 6.19 रुपये है और अच्छी कम्पनी की जो दवाई है, उसका नाम केल्सीगार्ड है और कम्पनी एक्टोरिन है। उसका 10 टैबलेट का दाम 9.50 रुपये है। इसी तरह से मैं आपको एक दवाई का नाम और लूंगा, वहां गैस्ट्रिक प्रोब्लम पीने के पानी की वजह से है। सोलन, हिमाचल प्रदेश की एक कम्पनी है, उस कम्पनी का नाम मैडीकोल है, उसकी 40 एम.जी. की 10 टैबलेट का दाम 6.11 रुपये है और वही टैबलेट अगर आप अच्छी कम्पनी की खरीदेंगे तो एक टैबलेट का दाम 6.30 रुपये आएगा तो जरा सोचिये कि गैस्ट्रिक की टैबलेट, शुगर की टैबलेट, बी.पी. की टैबलेट, हार्ट की टैबलेट, कफ टैबलेट, कैंसर की टैबलेट हमें कहां से मिलती है, वह दिल्ली के सैण्ट्रल मेडीकल स्टोर डिपो से मिलती है। सारा टेंडर अंडमान निकोबार से चेन्नई डिपो में जायेगा, वहां से कोलकाता डिपो में भेजेगा, फिर दिल्ली आएगा। दिल्ली में यहां पूरे घोटाले का राजा बैठकर कौन-कौन सी कम्पनियां ढूंढेगा, जिस कम्पनी का नाम नहीं है, पता नहीं है, एड्रैस नहीं है और वह दवाई बनाकर अंडमान निकोबार द्वीपसमूह में भेजेगा।

मैं सरकार से मांग करता हूं कि जब एक ही कम्पनी है, एक ही कम्पोजीशन है, एक ही पोटेंसी है तो एक का दाम 10 पैसा है तो उसी दवाई का दाम रैनबैक्सी जैसी बड़ी कम्पनी पांच रुपये क्यों लेती है, जब एक ही क्वालिटी है?

खासकर के अंडमान निकोबार द्वीपसमूह में मैडीकल का स्टाफ दवाई नहीं खरीदता, डॉक्टर से दवाई लिखाता है और दवाई बाहर से खरीदता है। अंडमान निकोबार की जनता जान गई है कि यह दवाई डुप्लीकेट है, सब-स्टैण्डर्ड है। वह वहां से दवाई लेगा और रास्ते में फेंक देगा। अंडमान निकोबार में वी.आई.पी. के लिए बढ़िया दवाई है, ब्रांडेड कम्पनी की है और आम आदमी के लिए ऑर्डिनरी कम्पनी की है। मैं बताना चाहता हूं कि यह मामला क्या है। जैनेरिक दवाई में कमीशन दो तिहाई है, 100 रुपये की दवाई खरीदने से 60 रुपये कमीशन मिलेगा, इसलिए जैनेरिक दवाई पर यहां जोर दे रहे हैं, जबकि ब्रांडेड दवाई में कम कमीशन है। अंडमान प्रशासन 21 करोड़ रुपये एक साल में दवाइयों पर खर्च करता है और दवाई 15 करोड़ रुपये की खरीदी जाती है। ब्रांडेड कम्पनी से, बड़ी कम्पनी से, प्रापराइटरी कम्पनी से कमीशन 15 परसेंट, 20 परसेंट, 25 परसेंट मिलता है। इस कमीशन पर दवाई खरीदने से 20 करोड़ रुपये की दवाई अंडमान को मिलेगी तो लोग बचेंगे, उनकी जिंदगी अच्छी रहेगी, उन्हें बीमारी नहीं होगी, इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि लोगों को न मारें, इसकी मैं मांग करूंगा, अनुरोध करूंगा। नारायण स्वामी जी ने अंडमान की बात, मेरी बात बड़े ध्यान से सुनी, मैं इनसे अनुरोध करूंगा कि हमारे लिए बढ़िया दवाई खरीदकर वहां की जनता को बचायें और जैनेरिक कम्पनी की दवाई हटायें। धन्यवाद।